ओ३म्

वेदों को भूले, आडम्बर में फँसे

(प्रत्येक वेदभक्त व राष्ट्रभक्त इसे पूरा अवश्य पढ़कर अपने विचार हमें भेजने का कष्ट करें।)

आत्मीय वेदभक्त सज्जनो और देवियो!

आप सभी स्वयं को आर्य अथवा वैदिक सनातन धर्मी कहते हैं, यह अच्छी बात है और ऐसा कहना हमारे स्वाभिमान का सूचक है। आर्य अथवा सनातनी कहना कोई सामान्य बात नहीं है, बशर्ते हम यह बात हृदय की गहराई से गम्भीरतापूर्वक कहें। यदि हम प्रदर्शनमात्र के लिए ऐसा कहते हैं, तब ऐसा कहने का कोई अर्थ नहीं है। हम प्रदर्शन करके दूसरों को मूर्ख बना सकते हैं, परन्तु ईश्वर को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। महर्षि यास्क ने आर्य को ईश्वरपुत्र कहा है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर की वेदोक्त आज्ञाओं का पालन करने वाला ही आर्य है और वही सनातनी है, क्योंकि महाप्राज्ञ, विश्व के प्रथम सम्राट्, मानव संविधान निर्माता भगवान् मनु ने वेद को ही सनातन कहा है।

वेद की आज्ञाएँ शाश्वत, सार्वभौमिक, सार्वजनिक तथा सर्वहितकारिणी होती हैं। इस कारण देश, काल

व परिस्थिति के अनुसार इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता। हमारे सभी ऋषि-ऋषिकाएँ, मुनि, देवी-देवता, राजा-रानी, महाराजा-महारानी आदि सृष्टि के आरम्भ से ही वेदाज्ञा का पालन करते रहे। जनसामान्य भी इसी वेदमार्ग पर चलता था, तभी सर्वत्र सुख-शान्ति, आनन्द व समृद्धि का साम्राज्य था। महाभारत एवं उसके पश्चात् सम्पूर्ण वैदिक व्यवस्था का विध्वंस कैसे हुआ, यह आपको अवगत ही है। लम्बे काल-खण्ड के पश्चात् ईश्वर की कृपा से ऋषि दयानन्द का आगमन हुआ और उन्होंने ही वेदों की उचित एवं प्रायः व्यावहारिक व्याख्या करने का प्रयास किया। कहीं-कहीं वैज्ञानिक (आधिदैविक) व्याख्या के भी संकेत हमें दिए, परन्तु आज ऐसा प्रतीत होता है कि उनके अपने आर्यसमाज ने ऋषि दयानन्द को ही आर्यसमाज से बाहर निकाल दिया है।

ऐसी स्थिति में हिन्दू समाज ही उनका आदर कैसे करे? जयघोष लगाना, उनके नाम से बड़े-बड़े आयोजन करना, उनके बड़े-बड़े चित्र लगाना अलग बात है, परन्तु उनके ग्रन्थों को पढ़ना, उन पर आचरण करना, उनके आदेशानुसार वेद तथा आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना, इन पवित्र ग्रन्थों के दूषित भाष्यों को पहचान कर दूर करने का प्रयास करना अलग बात है और

ऐसा करना ही ऋषि दयानन्द का वास्तविक जयघोष करना है। ऐसा न करके केवल जयघोषपूर्वक मेले लगाना, भाषण–प्रवचन–भजन आदि करना व कराना सात्त्विक मनोरंजन तो कहा जा सकता है, परन्तु इसे धर्म कदापि नहीं कहा जा सकता, यह पाखण्ड मात्र है।

आर्यसमाज ने पहले ही भगवत्पाद महर्षि ब्रह्मा, भगवान् शिव, भगवान् विष्णु, देवराज इन्द्र, देवर्षि नारद, महर्षि अगस्त्य, महर्षि भरद्वाज, महर्षि परशुराम, महर्षि सनत्कुमार, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि ऐतरेय महीदास, महर्षि याज्ञवल्क्य, महर्षि व्यास आदि महर्षियों एवं सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित चक्रवर्ती सम्राटों को कचरापात्र में डाल दिया। जैसे–तैसे भगवान् श्रीराम और भगवान् श्रीकृष्ण का नाम लिया जाता है, परन्तु अब भारतीय गौरव को मिटाने के लिए कृतसंकल्प कुछ व्यक्ति इनका भी अवमूल्यन करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार आर्यसमाज केवल ऋषि दयानन्द का एक ऐसा पन्थ बनकर रह गया है, जो ऋषि दयानन्द से बढ़कर किसी भी महापुरुष को नहीं मानता, परन्तु आदेश उनके भी नहीं मानता। आर्यसमाज में ऐसे अनेक भजन भी सुनने को मिल जाते हैं। उदाहरण—

'यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में, कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना।'

एक आर्य संन्यासी सम्भवतः स्वामी विद्यानन्द विदेह की एक पुस्तक मैंने कभी देखी थी— '**कल्पपुरुष दयानन्द**'। जरा विचारें कि सम्पूर्ण सृष्टि में अब तक ऋषि दयानन्द के समान अथवा उनसे बड़ा कोई महापुरुष नहीं हुआ? यह मिथ्या कथन स्वयं ऋषि दयानन्द को मिथ्यावादी सिद्ध करता है। ऋषि दयानन्द कहते हैं—

'**जो महर्षि ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषि मानते चले आये हैं, मैं उसी को मानता हूँ। यदि कपिल, कणाद जैसे ऋषियों के काल में मैं होता, तो मेरी गणना साधारण मनुष्यों में होती**'।

इस प्रकार ऋषि दयानन्द स्वयं को प्राचीन ऋषियों के समक्ष सामान्य व्यक्ति मानकर स्वयं को उनका अनुचर बताते हैं, परन्तु आर्यसमाज उन्हें सर्वोच्च स्थान देता है। इनमें कौन सच्चा और कौन झूठा, यह निर्णय आप सभी स्वयं करें। यदि स्वयं को झूठा मानें, तब भी पाप और यदि ऋषि दयानन्द को झूठा बताएँ, तो इनकी दृष्टि में वे पापी हो गये, तब ऐसे लोगों को आर्यसमाज में रहने की आवश्यकता ही नहीं है। वस्तुतः ऐसे विद्वान् भावुक एवं धनवान् ऋषिभक्तों को

प्रसन्न करने तथा उनसे दान–दक्षिणा प्राप्त करने के लोभ से ही ऐसी मिथ्या व भावुकतापूर्ण बातें करने का पाप करते हैं। हम ऋषि दयानन्द की कोई बात नहीं मानते, परन्तु मंच पर बार–बार उनका नाम लेकर उनकी प्रशंसा में एड़ी से चोटी तक का पूरा बल लगा देते हैं। ऋषि ने कहा था— **'वेद सब सत्य विद्या का पुस्तक है',** परन्तु हमें इस पर किंचिदपि विश्वास नहीं है। हमें अंग्रेजी पाश्चात्य शिक्षा पर सम्पूर्ण विश्वास हैं, परन्तु वेदादि शास्त्रों पर किञ्चित् भी नहीं। यही कारण है कि हम अपने बच्चों को मैकाले की आधुनिक शिक्षा दिलाते हैं और दीन–हीन लोगों के बच्चों को आर्ष विद्या पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। हम यह अपने हृदय से ईश्वर की साक्षी में विचारें कि क्या यह ईमानदारी है? क्या यह आर्यत्व है? क्या ऋषि दयानन्द ने यही कहा था?

ऋषि दयानन्द ने वेद के पठन–पाठन को परमधर्म कहा है, जिसे सभी आर्य समाजों के सत्संगों में आर्य समाज के तृतीय नियम के रूप में पढ़ा जाता है। क्या हमारे परिवारों, आर्य समाजों एवं गुरुकुलों में कहीं वेद का पठन–पाठन होता है? ऐसी स्थिति में अर्थात् परमधर्म को ही मूलसहित समाप्त कर देने पर भी हम स्वयं को आर्य कहते हैं और **'आर्य समाज अमर**

रहे', 'वेद की ज्योति जलती रहे' जैसे नारे लगाते हैं। विचारें! क्या यह पाखण्ड नहीं है? तब केवल पौराणिकों के मूर्तिपूजन आदि को ही पाप क्यों कहा जाए? जरा विचारें कि पौराणिक वेदपाठ करते हैं, वेदमन्त्रों से यज्ञ एवं मूर्तिपूजनादि करते हैं, वेद के पुस्तक को अतीव श्रद्धा से रखते हैं, परन्तु वेदार्थ नहीं जानते। इधर हम वेद का जयघोष करते हैं, वेदमन्त्रों से एक कुण्डीय व बहुकुण्डीय वा पारायण यज्ञ करते हैं, वेद प्रवचन के नाम पर नाना कथा-कहानियाँ सुनाते हैं, भोजनादि से पूर्व मन्त्र बोल लेते हैं, परन्तु वास्तविक वेदार्थ को नहीं जानते, तब हम पौराणिकों से श्रेष्ठ कैसे हो गये? वे वेद के स्थान पर उपनिषद्, गीता, भागवत पुराण वा रामचरितमानस से सन्तुष्ट हैं और हम वेद के स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश, उपनिषद्, दर्शन, व्याकरण आदि से सन्तुष्ट हैं। तब दोनों में कितना अन्तर रह गया? ध्यान रहे कि जिस वस्तु की उपेक्षा कर दी जाए, वह धीरे-धीरे स्वयं ही समाप्त हो जाती है, तब क्या हम सबने अर्थात् आर्य समाजी एवं पौराणिक दोनों ने ही वेद को समाप्त करने का संकल्प ले रखा है अथवा हम अपनी मूर्खता का परिचय देकर जाने-अनजाने में वेदहत्या (ब्रह्महत्या) के पाप के भागीदार बन रहे हैं?

वेद प्रचार, वैदिक विद्वान्, वेदकथा, वैदिक प्रवक्ता, अन्तर्राष्ट्रीय वक्ता जैसे आकर्षक शब्द हमारे यहाँ मिल जायेंगे, परन्तु वेद को हमने अलमारियों में बन्द कर दिया है। परमात्मा की अमर वाणी, ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण-ज्ञान विज्ञान के ग्रन्थ वेद की ऐसी दुर्दशा करके भी हम इस पर बड़े-बड़े मञ्चों पर भाषण देने का दुस्साहस कैसे करते हैं? सायण व महीधर के वेदभाष्यों और ब्राह्मण ग्रन्थों के भाष्यों में पशुबलि, मांसाहार जैसे पापों पर हम प्रहार करते हैं, परन्तु जब कोई मेरे जैसा व्यक्ति आर्य विद्वानों के वेदभाष्यों अथवा निरुक्त व ब्राह्मण ग्रन्थों के भाष्यों में ये सभी पाप दिखाये, तो उसे आर्य विद्वानों को नीचा व मूर्ख सिद्ध करने वाला, अहंकारी व पण्डितमानी और न जाने किन-किन अपशब्दों से अपमानित किया जाता है। इसी पक्षपातपूर्ण आचरण को ऋषि दयानन्द ने अधर्म कहा है। वे पौराणिक जिनकी जय बोलते हैं, उनकी कोई बात नहीं मानते, वैसे ही हम जिनकी जय बोलते हैं, उनकी कोई बात नहीं मानते, तब दोनों में अन्तर क्या है? उनके मन्दिरों में स्वच्छता होती है, अतिथि सत्कार होता है, भक्तिरस का कुछ वातावरण होता है, श्रद्धा (भले ही अन्धश्रद्धा) होती है, परन्तु हमारे यहाँ शुद्धता उनके जैसी नहीं होती, राजनैतिक चालबाजियाँ, स्वभाव की कर्कशता व अतिथि का

तिरस्कार होता है। श्रद्धा नाम की कोई वस्तु हमारे यहाँ नहीं है। आचरण की भ्रष्टता उधर भी देखी जा सकती है और इधर भी, तब कैसे कहें कि हम उनसे अधिक श्रेष्ठ हैं?

उधर मूर्तिपूजा, हवन, गंगा स्नान आदि बाह्य आडम्बरों से मुक्ति मिल जाती है, वेदज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं, तो यहाँ केवल योगसूत्रों को स्मरण कर लेने, उन पर प्रवचन करने व सुनने, यम-नियमों के पालन के बिना केवल आँख बन्द कर लेने, घर छोड़कर भाग जाने तथा भगवे वस्त्र पहनने से मुक्ति मिल जाती है, वेद की यहाँ भी कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसी स्थिति में दोनों में कोई विशेष अन्तर है ही नहीं। ईश्वर की दुर्दशा तो दोनों ही कर रहे हैं, क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान वेद के बिना दोनों ही मुक्ति के दावे कर रहे हैं, जैसे कभी ईसाइयों का पोप दावे करता था। कुछ लोग अपनी अज्ञानता छिपाने के लिए यह कहते देखे जाते हैं कि वर्तमान में वेद को सब समझते व मानते नहीं, तो योगदर्शन का ही प्रचार करना चाहिए। वे ऐसा करके वही पाप कर रहे हैं, जो पाप वे लोग कर रहे हैं, जो वेद को पीछे धकेलकर गीता को वेद का सार बताकर उसे ही आगे करके चलते हैं। जिस वेद को छोड़ने से संसार की दुर्दशा हुई, उसी वेद को

ऋषियों का नाम लेने वाले विद्वान् व धार्मिक नेता मिटाने में लगे हों, उस देश वा विश्व का कौन रक्षक होगा? यहाँ यह भेद अवश्य है कि पौराणिक शास्त्रों के नाम पर पशुओं की बलि चढ़ाते रहे हैं। आज भी दक्षिण व पूर्वोत्तर भारत में धर्म के नाम पर बलि चढ़ाना एवं मांस-मछली के भक्षण जैसा पाप हो रहा है, आर्य समाज में ऐसा कभी नहीं हुआ और न हो ही रहा है। किसी पैराणिक हिन्दू की जगदम्बा, चामुण्डा, भवानी, भैरव आदि देवी-देवताओं के नाम से मांसाहारी होटल एवं मदिरा की दुकानें मिल जाएँगी, परन्तु कोई आर्य समाजी किसी देवी-देवता, महापुरुष के नाम से ऐसा पाप करते हुए नहीं मिलेगा। यह पौराणिक को अवश्य विचारना चाहिए। आज बुरे वा भले कर्मकाण्डों तक ही सनातन वैदिक धर्म को सीमित कर दिया है। इसे देखकर सनातन व भारत विरोधी अवश्य प्रसन्न होंगे, क्योंकि ये कर्मकाण्ड न तो कथित सनातनियों और न आर्य समाजियों को ही उनका बौद्धिक दास बनने से रोक सकते हैं। उन धर्मविरोधी पिशाचों को केवल हमारे वैदिक विज्ञान से संकट प्रतीत होता है, इसलिए वे हमें रोकने के लिए अवश्य प्रत्यनशील हैं।

यहाँ योग के विषय में यह भी उल्लेखनीय है कि

योग के वैदिक प्रवक्ता योगदर्शन के विभूतिपाद को नहीं मानते। क्या बौद्ध लामाओं के चमत्कारों के आगे हमारी सन्तान को नतमस्तक कराने एवं ऋषियों के योगबल की गरिमा मिटाने में ये भी बौद्ध अथवा वामपंथियों के परोक्ष सहायक नहीं बन रहे हैं? हाँ, यह बात अवश्य है कि राष्ट्र एवं मानवता के लिए बलिदान देने में आर्य समाज की समता कोई नहीं कर सकता है, परन्तु यह बात पुराने आर्यों पर ही लागू होती है। **वर्तमान आर्यसमाजियों को पुराने इतिहास सुनाने से अधिक स्वयं इतिहास लिखने में पुरुषार्थ करना चाहिए।** पूर्वजों के नाम से कब तक स्वयं को धन्य मानते रहेंगे? आज देश व विश्व में क्या-2 अनर्थ हो रहे हैं, उन्हें दूर करने के लिए हम क्या कर रहे हैं? क्या सत्ता व विपक्ष के पापों के विरुद्ध हम कुछ बोलने का साहस करते हैं?

अभी हाल में 20-30 मार्च 2025 को मुम्बई में अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ, उसमें वेद का नाम तक नहीं था। मैंने मुम्बई का टिकट भी करवा लिया, परन्तु जब कार्यक्रम छपकर आया, तो उसमें कहीं वेद का नाम भी नहीं था। सार्वदेशिक के आदरणीय प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के भरसक प्रयास के पश्चात् भी वेद सम्मेलन को कार्यक्रम में

सम्मिलित नहीं किया जा सका। डॉ. वेदपाल और आचार्या नन्दिता के अतिरिक्त किसी वैदिक विद्वान् वा विदुषी का नाम भी कार्यक्रम में नहीं था। आर्य समाज के इतिहास में वेद एवं वैदिक विद्वानों का ऐसा अपमान कभी नहीं देखा वा सुना गया। भले ही वर्तमान वैदिक विद्वान् मेरे वेदविज्ञान से सहमत नहीं हैं, बल्कि अधिकांश विरोधी हैं, पुनरपि उन्होंने जीवन भर वेद की यथा-तथा साधना तो की ही है। उनकी भी उपेक्षा! उधर मेरा नाम तो था, परन्तु वेद का नाम नहीं था। ऐसे षड्यन्त्र भरे सम्मेलन में जाने से मैंने मना कर दिया। मुम्बई में रहते हुए भी मैं सम्मेलन में नहीं गया। सारा कार्यक्रम स्वाध्यायविहीन नेताओं, विशेषकर दिल्ली सभा के कुछ महत्त्वाकांक्षी व अहंकारी नेताओं, यूट्यूबर्स व टी.वी. एंकर्स की भेंट चढ़ गया। युवाओं को प्रोत्साहित करना अच्छी बात है, परन्तु वरिष्ठ विद्वान् और विदुषियों की उपेक्षा करना कदापि उचित नहीं है। किसी गुरुकुल के आचार्य व आचार्या का भी नाम इस सम्मेलन में कहीं नहीं था। क्या इस रही सही गुरुकुल प्रणाली को भी आर्यनेता अब सर्वथा भुला देंगे? **भले ही कथित विद्वान् मुझे गुरुकुलों का विरोधी सिद्ध करें, परन्तु मैं तो गुरुकुलों को वैज्ञानिकों के लिए तीर्थ बनता देखना चाहता हूँ और निरन्तर इसी दिशा में आगे**

बढ़ रहा हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि आयोजक मण्डल को कुछ वेद विरोधियों ने अपहृत कर लिया था। उन वेद विरोधियों को पहचानने की आवश्यकता है।

मेरी जानकारी के अनुसार मुम्बई सम्मेलन में आदरणीय श्री अशोक आर्य, अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर ने नवलखा महल, उदयपुर में चलाए जा रहे प्रकल्पों की जानकारी दी। यह बात मुझे अवश्य सकारात्मक लगी। श्री अशोक आर्य निष्कामभाव से वह कार्य कर रहे हैं, जिससे प्रतिवर्ष आर्यसमाज से इतर हजारों लोग आर्य समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण लेकर जाते हैं। आर्य समाज का सामान्य परिचय कराने के लिए नवलखा महल अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसमें आदरणीय **श्री दीनदयाल गुप्ता, कोलकाता एवं आदरणीय श्री सुरेशचन्द्र आर्य स्तम्भ के रूप में जुड़े हैं और ये दोनों महानुभाव हमारे साथ भी जुड़े हैं।**

एक महत्त्वाकांक्षी आर्यनेता को मैंने तथा इन्दौर के प्रिय राकेश उपाध्याय ने सप्रमाण बार-बार समझाया कि वेद के यथार्थ स्वरूप को जाने बिना आर्य समाज, वैदिक सनातन धर्म, भारत राष्ट्र एवं मानवता नहीं बचेगी। आर्य विद्वानों के भाष्यों में अश्लीलता, पशुबलि, नरबलि, छुआछूत आदि के

प्रमाण दर्शाये। अपने वेद विज्ञान सम्मेलन में इन पर विस्तार से चर्चा की, अपने वैज्ञानिक भाष्य भी बताये। मान्य सभाप्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य के माध्यम से सन् 2018 से अब तक शीर्ष आर्य विद्वानों व विदुषियों को इस आशय के अनेक प्रश्नों से युक्त अनेक पत्र भिजवाये, परन्तु प्रायः सब मौन रहे। विगत वर्ष हमने संसार भर के वेदविरोधियों को वेदादि शास्त्रों पर आक्षेप करने की खुली चुनौती विभिन्न माध्यमों से दी। इस पर हमें कुल 134 पृष्ठ के आक्षेप प्राप्त हुए। इसमें से 99 पृष्ठ तो केवल एक मुस्लिम स्कॉलर के ही थे। हमने उन सभी आक्षेपों को शंकराचार्यों, कुछ महामण्डलेश्वरों तथा कुछ पौराणिक व आर्य विद्वानों एवं सभाओं को भेजा और निवेदन किया कि वे उन आक्षेपों का उत्तर देने का कष्ट करें, उनके उत्तर को उनके ही नाम से प्रकाशित किया जायेगा। महीनों व्यतीत होने पर भी किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब हमने उनका उत्तर दिया, जो 'अभेद्य वेद' नामक पुस्तक के रूप में नवम्बर 2024 में प्रकाशित हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी द्वारा भी अनेक वरिष्ठ आर्य विद्वान् एवं विदुषियों को वे आक्षेप भेजे गए। इसके साथ उन्होंने मेरे द्वारा लिखी पुस्तक 'अभेद्य वेद' भी भेजकर निवेदन किया कि विद्वान् उन आक्षेपों पर अपने विचार प्रस्तुत करें, उनका उचित उत्तर दें

अथवा मेरी 'अभेद्य वेद' पुस्तक पर अपने विचार भेजें। उन विद्वानों में से एक विद्वान् आदरणीय डॉ. रामप्रकाश वर्णी, प्रोफेसर, श्रद्धानन्द शोध संस्थान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने मुक्त 'अभेद्य वेद' पुस्तक की कण्ठ से प्रशंसा की।

एक अन्य वयोवृद्ध वरिष्ठ विद्वान्, जिनके प्रति मेरा बड़ा आदरभाव रहा है, इस कारण मैं उनका नाम सार्वजनिक नहीं कर रहा हूँ, ने मेरी पुस्तक पढ़कर मुझे पण्डितमानी व अहंकारी होने के साथ-साथ बड़े-बड़े आर्य विद्वानों को मूर्ख सिद्ध करने वाला कहा है। साथ ही उन्होंने कहा है कि इस पुस्तक में अग्निव्रत जी ने सारी सीमाएँ लाँघ दी हैं। इस पत्र से मुझे बहुत दुःख हुआ, परन्तु आश्चर्य नहीं। मैं समझ गया कि आर्य समाज के वर्तमान ईर्ष्या-द्वेष व कटुता भरे वातावरण में इन विद्वान् महोदय (डॉ. साहब...) ने किसी के भड़काने पर इन कुवाच्यों का प्रयोग किया है, अन्यथा उनसे लगभग 25 वर्ष पुराने परिचय में ऐसा कभी नहीं हुआ। आक्षेपकर्त्ता मुस्लिम स्कॉलर ने वेद पर जो भी आक्षेप लगाए हैं, वे अधिकांश आर्य विद्वानों के वेद भाष्यों को उद्धृत करके ही लगाए हैं। उसका लक्ष्य विशेष रूप से आर्य विद्वानों व ऋषि दयानन्द पर ही प्रहार करना था। इन आक्षेपों को

पढ़कर कोई भी वेदभक्त व ऋषियों का अनुचर भाष्यकर्त्ता विद्वानों की विद्वत्ता की प्रशंसा नहीं कर सकता है और न यह ही कह सकता है कि कहीं-कहीं भूल की उपेक्षा करके उनके अन्य अच्छे कार्यों की ही प्रशंसा की जाए। **डॉ. साहब अथवा ऐसे ही वर्तमान अन्य आर्य विद्वानों को केवल पुराने आर्य विद्वानों के सम्मान की चिन्ता है, भले ही कोई वेद का सर्वनाश ही क्यों न करे, वेद को गाली क्यों न दे।** वस्तुतः यह घोर पाप है। भला वेद के सम्मान के समक्ष किसी भी विद्वान् के सम्मान का मूल्य ही क्या है? डॉ. साहब को मुझे भला-बुरा कहने के स्थान पर उस भाष्य पर आक्षेपकर्त्ता के आक्षेप का उत्तर देकर आर्य विद्वान् द्वारा किए भाष्य को तर्कसंगत सिद्ध करना चाहिए था, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और न ऐसा किया जा सकता है, क्योंकि वे भाष्य हैं ही ऐसे। अच्छा होता डॉ. साहब स्वयं उन मन्त्रों का सुन्दर भाष्य करते, परन्तु उन्होंने ऐसा भी नहीं किया। इससे उन्होंने एक तरह से वेदविरोधियों का ही पक्ष लिया।

मैं सबको स्पष्ट संदेश देना चाहता हूँ कि कोई वेद वा प्राचीन महर्षियों का अपमान करे, उसे मैं कदापि नहीं सह सकता। यदि वह अपमान हमारे अपने ही पूज्य विद्वानों के भाष्यों को आधार बनाकर किया जाए,

तो मैं उस मिथ्या भाष्य का अवश्य ही खण्डन करके शुद्ध भाष्य करने का प्रयास करूँगा। **मेरे लिए वेद से बड़ा कोई नहीं है।** इसके लिए **चाहे मुझे कोई अपना कितनी भी गाली क्यों न दे, परन्तु मैं अपने धर्मपथ का त्याग कभी नहीं करूँगा।** पक्षपातरहित न्याय ही धर्म है। हम सायण व महीधर आदि भाष्यकारों का तो खण्डन करें, परन्तु वैसे ही भाष्य यदि अपनों ने किए हैं, तो उनका बचाव करें, यह अधर्म है, जो मुझे कदापि स्वीकार नहीं। यदि हमारा यही पक्षपातपूर्ण आचरण रहा, तो कोई भी इन भाष्यों के आधार पर वेद पर प्रहार करेगा और हम मूक व कायर बनकर सहते रहेंगे। वे लोग हमारे बच्चों को ऐसे भाष्य दिखलाकर ईसाई, मुसलमान अथवा वामपन्थी बनाते रहेंगे। मैंने निरुक्त भाष्य करते समय भूमिका में कुछ आर्य विद्वानों द्वारा किए गए कुछ भाष्यों को उद्धृत किया है। एक कथित आर्य विद्वान् ने मुझे बदनाम करने तथा सभी गुरुकुलों के आचार्यों को मेरे विरुद्ध संगठित करने के लिए उन्हें पत्र लिखा था। उसमें कहा गया था कि किसी गुरुकुल में निरुक्त का अश्लीलता व पशुहिंसा समर्थक भाष्य नहीं पढ़ाया जाता। डॉ. साहब ने भी प्रधान जी को लिखा है—

"आर्य समाज के जिन-जिन शीर्ष विद्वानों ने वेदों

का भाष्य किया है, उन सभी में नरबलि, पशुबलि, मांसाहार और अश्लीलता को स्वीकार किया गया है। आश्चर्य है कि आपने यह कलंक आर्य समाज के सभ्य विद्वानों पर कैसे लगा दिया? यह बात सर्वथा ही मिथ्या एवं उन पूज्य विद्वानों की गरिमा व श्रम को ठेस पहुँचाने वाली है। आपने निश्चित रूप से वे भाष्य पढ़े ही नहीं, अन्यथा अग्निव्रत जी के इस मिथ्या प्रलाप को स्वीकार न करते।''

इन डॉ. साहब द्वारा मेरी पुस्तक 'अभेद्य वेद' पढ़कर भी मुझे मिथ्या प्रलापी बताने को मैं क्या कहूँ? यद्यपि इस पुस्तक में मैंने ऐसे उद्धरण कम ही दिए हैं। इसके लिए आप हमारी वेबसाइट[१] पर निरुक्त के हमारे वैज्ञानिक भाष्य '**वेदार्थ-विज्ञानम्**' की भूमिका पढ़ सकते हैं। आप किसी भी विद्वान् से पूछ सकते हैं कि वे बतायें कि संसार में कौन सा ऐसा निरुक्त भाष्य है, जिसमें ये पाप विद्यमान नहीं हों। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के शतपथ ब्राह्मण एवं ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य में क्या पशुबलि, नरबलि व मांसाहार सिद्ध नहीं होता? कोई-कोई इसे केवल अनुवाद कहकर पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का पक्ष लेते हैं। वे विद्वान् मुझे बताएँ कि ऐसे पाप सिद्ध करने वाले

[1] https://vaidicphysics.org

अनुवाद क्यों किए गए? क्या वे अनुवाद यथार्थ हैं? क्या इन अनुवादों से ब्राह्मण ग्रन्थ बदनाम नहीं होते हैं? ऊपर हमने जिन डॉ. साहब की चर्चा की है, वे आर्य जगत् के वर्तमान में सम्भवत: सबसे बड़े वेदज्ञ माने जाते हैं। वे ब्राह्मण ग्रन्थों में कथाएँ तथा मांस प्रकरण का होना भी मानते हैं। ऐसे आक्षेप लगाने वाले तो मुस्लिम, ईसाई, यहूदी एवं वामपन्थी ही बहुत हैं, कम से कम आर्य विद्वानों को तो ऐसा नहीं करना चाहिए। वे **'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे'** की कहावत चरितार्थ करते हुए मुझे ही पण्डितमानी व अहंकारी बतला रहे हैं। वे ऐसे आर्य विद्वानों के नाम ले रहे हैं, जिनके भाष्यों में ऐसे पाप नहीं हैं, परन्तु उनके नाम छुपा रहे हैं, जिनके भाष्यों में ये पाप विद्यमान हैं।

हाँ, यह अवश्य कहूँगा कि आर्य विद्वानों का **वेदभाष्य** सायणादि के वेदभाष्य से तो श्रेष्ठ है तथा पशुबलि आदि पाप इसमें नहीं हैं। कहीं-2 अश्लील अर्थ किसी-2 विद्वान् से अवश्य हो गया है। इन विद्वानों ने वेदों को इन पापों से मुक्त करने का पूर्ण प्रयास किया भी है, परन्तु जिन विद्वानों ने निरुक्त का भाष्य किया, वे वहाँ वेद को इन पापों से बचाने में असफल रहे। निरुक्तकार ने जिन वेदमन्त्रों का भाष्य

किया, उसे तथा निर्वचनों के विज्ञान को समझने में हमारे विद्वान् भी असफल रहे। जब हमारे विद्वानों ने ब्राह्मण ग्रन्थों पर कलम चलायी, वहाँ वे भी पशुबलि व मांसाहार सिद्ध कर गये। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी सर्मपणानन्द सरस्वती) अवश्य अपवाद हैं। इस कारण ही हमारे विद्वानों के ग्रन्थों में ये पाप आ गये। ये भाष्य पौराणिक विद्वानों से अच्छे हैं, इतना मात्र सन्तोषजनक नहीं हो सकता। **वेदभाष्य वेद अर्थात् परब्रह्म के विज्ञान के स्तर का ही होना चाहिए। ध्यान रखना चाहिए कि परमात्मा से बड़ा ज्ञान किसी का नहीं हो सकता, तब वेदभाष्य ऐसा होना चाहिए, जो वर्तमान विज्ञान से बहुत आगे हो। ऋषियों के ग्रन्थों का भाष्य भी ऐसा ही होना चाहिए। आज ऐसा किसी आर्य विद्वान् का भाष्य नहीं है, यह मेरी पीड़ा है, जिसे कोई समझने को तैयार नहीं है।** कोई बात नहीं, हम तो वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के आधिदैविक भाष्य करते रहेंगे। यदि कोई यहूदी, ईसाई व मुसलमान अपने साम्प्रदायिक ग्रन्थों का ऐसा वैज्ञानिक भाष्य करता और उसके आधार पर वर्तमान विज्ञान को चुनौती देता, तो वह उनके लिए विश्व का सबसे बड़ा पूज्य व वह संस्था सबसे महान् संस्था हो जाती, परन्तु कथित सनातनियों व आर्य समाजियों की महिमा का तो क्या कहना, जिन्हें केवल

आडम्बरी व्यक्ति ही महान् प्रतीत होते हैं। बौद्धिक दासता की यह कैसी पराकाष्ठा है?

डॉ. साहब वेदभाष्यों में ब्राह्मण ग्रन्थों को विशेष महत्ता नहीं देते, बल्कि निरुक्त को ही महत्त्व देते हैं, यह बात स्वयं ऋषि दयानन्द के मत के विपरीत है। प्रथम तो उन्हें समझना होगा कि निरुक्त स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थों के कुछ पदों का भी निर्वचन करता है और अनेक अज्ञात ब्राह्मण वचनों की व्याख्या भी करता है, तब कौन अधिक महत्त्वपूर्ण रहा? ऋषि दयानन्द अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'भाष्यकरणशंका-समाधानादि विषय' नामक अध्याय में प्रथम प्रश्न के उत्तर में ही अपने वेदभाष्य की प्रामाणिकता दर्शाते हुए लिखते हैं— 'यानि पूर्वैर्देवैर्विद्वद्भिर्ब्रह्मणमारभ्य...' यहाँ सर्वप्रथम ब्राह्मण ग्रन्थों की ही प्रामाणिकता दर्शाते हैं, पाणिनि, पतंजलि व यास्क जैसे ऋषियों का नाम इनके पश्चात् ही लिया है। ऐसी स्थिति में भी ब्राह्मण ग्रन्थों की उपेक्षा करना वेद को भारी क्षति पहुँचाना है। वस्तुतः ब्राह्मण ग्रन्थों की उपेक्षा करने के कारण ही आर्य समाज वेद से दूर और दूरतर होता चला गया है। दूसरी ओर पौराणिक जगत् नाना प्रकार के यागों की परम्परा तो निभा रहा है, परन्तु वह ब्राह्मण ग्रन्थों के यथार्थ को न समझ पाने से यज्ञों में पशुबलि का

पाप अब तक भी कर रहा है। ये डॉ. साहब मुझ पर पं. मधुसूदन ओझा एवं पं. मोतीलाल शास्त्री के कल्पित ब्राह्मण विज्ञान का अनुकरण करने का आरोप लगा रहे हैं। सम्भवत: उन्हें ज्ञात नहीं है कि मैं सन् 1992 से ही इन ओझा तथा शास्त्री के कल्पित विज्ञान को देखता व सुनता रहा हूँ। उस समय मैंने डॉ. रामनाथ वेदालंकार, आचार्य राजवीर शास्त्री (दयानन्द –सन्देश), स्वामी ओमानन्द सरस्वती (झज्जर), डॉ. वेदपाल सुनीथ, डॉ. शिवपूजन सिंह कुशवाहा, डॉ. धर्मवीर (परोपकारिणी सभा), डॉ. भवानीलाल भारतीय, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (दिल्ली) आदि लगभग 40 विद्वान् व विदुषियों को ओझा सम्प्रदाय को उत्तर देने का आग्रह किया था। इन विद्वानों में स्वामी ओमानन्द सरस्वती, डॉ. वेदपाल सुनीथ एवं डॉ. धर्मवीर से तो मैं स्वयं मिला था। किसी ने पं. मोतीलाल शास्त्री के लेखों का उत्तर नहीं दिया। अन्त में डॉ. भवानीलाल भारतीय के आग्रह पर कुछ वर्ष पश्चात् मैंने ही उन्हें चुनौती दी थी, कोई आर्य विद्वान् नहीं आया।

डॉ. साहब ने निरुक्त भाष्यकारों में स्वामी ब्रह्ममुनि, पं.भगवद्दत्त, पं. चन्द्रमणि, आचार्य दुर्ग एवं आचार्य स्कन्दस्वामी का नाम लिया है। इन सबके भाष्य मेरे

पास हैं। इन सबके भाष्यों में पूर्वोक्त अनेक पाप विद्यमान हैं। जिन्हें विश्वास न हो, वे इनके निरुक्त भाष्य अथवा 'वेदार्थ-विज्ञानम्' (निरुक्त भाष्य) की भूमिका पढ़ सकते हैं। 'वैदिक इतिहासार्थ निर्णय' में पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ ने स्वयं महर्षि यास्क पर ही प्रश्न खड़े कर दिये हैं। अपने निरुक्त भाष्य में आचार्य विश्वेश्वर ने भी महर्षि यास्क पर ही अश्लीलता का आरोप मढ़कर उनकी खूब आलोचना की है। ये विद्वान् महर्षि यास्क को दोष दे रहे हैं, परन्तु इतना नहीं समझ रहे हैं कि उन्हें महर्षि यास्क का ग्रन्थ समझ ही नहीं आया। मेरा विश्वास भी है और दावा भी है कि केवल 'वेदार्थ-विज्ञानम्' में ऐसे किसी पाप की गन्ध भी नहीं है, बल्कि यह विश्व के वेदाभिमानियों एवं वैज्ञानिकों को शताब्दी तक अनेक क्षेत्रों में मार्गदर्शन करने वाला एकमात्र ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त सभी निरुक्त भाष्य त्रुटिपूर्ण एवं अपूर्ण हैं। यह मैं अपने पास उपलब्ध नौ भाष्यों के आधार पर कह रहा हूँ। 14 वें अध्याय का किसी ने भी पूरा भाष्य नहीं किया है। केवल हमारा भाष्य ही सम्पूर्ण, विस्तृत एवं वैज्ञानिक भाष्य है। हमने इसमें विद्यमान सम्भवतः सभी सात सौ मन्त्रों का आधि-दैविक भाष्य किया है। जिन-जिन मन्त्रों वा प्रकरणों का अधिकांश विद्वानों ने पापपूर्ण भाष्य किया है, उसका हमने तीनों प्रकार का

भाष्य किया है। निरुक्त की भूमिका में अत्यन्त सरल प्रतीत होने वाले **'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि...' मन्त्र का हमने 16 प्रकार का भाष्य किया है, जिनमें 9 प्रकार के आधिदैविक, 5 प्रकार का आधिभौतिक एवं 2 प्रकार का आध्यात्मिक भाष्य किया है।**

पूर्व में भी एक विद्वान् ने अपने पत्र में लिखा था कि अग्निव्रत जी वैयाकरण नहीं हैं, इसलिए महाभाष्य के 'पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या' का यथार्थ नहीं समझते। सभी विद्वान् इसे महर्षि पतञ्जलि द्वारा उस समय कुछ वर्गों में प्रचलित मांसभक्षण की मर्यादा के निर्धारण का उदाहरण मानते हैं। वे भूल जाते हैं कि इस प्रकार तो अन्य पापों के विषय में भी मर्यादा निर्धारित की जा सकती है। वे यह भी भूल जाते हैं कि **सज्जन पुरुष उदाहरण भी सात्त्विक ही देते हैं, पापियों के उदाहरण नहीं देते।** विकृत मानसिकता वाला 'घर की मुर्गी दाल बराबर' कहकर दाल को मुर्गी के मांस से हीन सिद्ध करेगा, परन्तु सात्त्विक पुरुष इसके स्थान पर 'घर का जोगी जोगना, दूसरे गाँव का सिद्ध' यह उदाहरण देगा। अब जरा सोचें कि महर्षि पतञ्जलि को उदाहरण के लिए मांसाहारी व्यक्ति ही दिखाई दिए?

ये विद्वान् निरुक्त के स्त्री–पुरुष के विक्रय के प्रसंग पर कहते हैं कि यहाँ महर्षि यास्क ने विधान नहीं किया, बल्कि उस समय की सामाजिक दुर्दशा को दर्शाया है। पुरुष का विक्रय तो शुनःशेप आख्यान के आधार पर स्वीकार किया है, परन्तु इससे नरबलि स्वतः ही सिद्ध हो जाती है। यह कैसी विडम्बना है? स्त्रियों के विक्रय पर इन विद्वान् का यह कहना है कि ऐसा तो हमारे बाल्यकाल में भी प्रचलित था, देवदासी प्रथा को भी सब जानते ही हैं। यहाँ यह विद्वान् क्या कहना चाहते हैं कि महर्षि यास्क के समय अथवा उससे पूर्व (वैदिक काल) में भी ऐसा ही था?

हमारे मत में महर्षि यास्क के समय न तो मूर्ति पूजा थी और न ही बलि प्रथा थी। महर्षि दयानन्द ने भी इसे महाभारत के बहुत काल पश्चात् माना है। आर्ष ग्रन्थों में हुई मिलावट के आधार पर हमें ऐसी बातें कहने से बचना चाहिए। यह आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण के 33वें अध्याय में है। आज तक उस सम्पूर्ण आख्यान को कोई नहीं समझ पाया। हमने अपने 'वेदविज्ञान–आलोकः' में सम्पूर्ण अध्याय का सूर्य–परक वैज्ञानिक व्याख्यान किया है। वहाँ शुनःशेप कोई मनुष्य नहीं, बल्कि कुछ रश्मियाँ हैं, जो सूर्य के केन्द्रीय भाग में नाभिकीय संलयन की प्रक्रिया को

प्रारम्भ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस सम्पूर्ण आख्यान में जो सूर्य विज्ञान है, उसे सम्भवतः संसार का कोई वैज्ञानिक भी नहीं जानता, ऐसा हमारा विश्वास है। कुछ आर्य विद्वान् ब्राह्मण ग्रन्थों में मांसाहार व पशुबलि वाले प्रकरण को प्रक्षिप्त भी मानते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण के अपने भाष्य 'वेदविज्ञान-आलोकः' में मैंने सिद्ध किया है कि उसमें एक पद भी मिलावट नहीं है। यदि उन प्रसंगों को हटा दिया जाए, तो ग्रन्थ का क्रम ही बिगड़ जाएगा।

वास्तविकता यह है कि ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा व शैली को कोई समझ नहीं ही नहीं पाया और सभी रूढ़ अनुवाद कर बैठे, इस कारण ब्राह्मण ग्रन्थों के सिर ये पाप मढ़ दिए गए।

सारांशतः ऐतरेय ब्राह्मण एवं निरुक्त का वैज्ञानिक भाष्य करके शास्त्रों को उनका गौरव दिलाने का प्रयास करने के उपरान्त भी हमें अपनों व परायों की गालियाँ खानी पड़ रही हैं। यदि मैं चाहता तो मैं भी ध्यान-योग शिविर, पाखण्ड-खण्डन, वेद कथाएँ, सरल साहित्य लेखन, राष्ट्रीय विषयों पर ओजस्वी भाषण एवं बहुकण्डीय यज्ञों के आयोजन करके प्रभूत मात्रा में धन व यश प्राप्त कर सकता था, परन्तु इन सबसे वेद व ऋषियों पर हो रहे प्रहारों का उत्तर नहीं दिया

जा सकता था। अपने भारतीयों को पश्चिमी कुसभ्यता व अपसंस्कृति के प्रवाह में बहने से बचाया ही नहीं जा सकता था। आधुनिक विज्ञान के सम्मुख खड़े होने का भी साहस नहीं किया जा सकता था। हम मंचों पर वैदिक शूरता का अभिनय करते रहें और हमारे ही बच्चे और स्वयं हम भी अन्दर से पश्चिमी शिक्षा के सम्पूर्ण दास बने रहें, यह दोहरा चरित्र कम से कम मुझे तो स्वीकार नहीं है। मुझे धन, यश व प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि केवल देवों, ऋषियों व वेदों के सम्मान की रक्षा चाहिए।

इन दो महत्त्वपूर्ण विशाल ग्रन्थों के साथ छोटी-बड़ी 34 पुस्तकें मैं अब तक लिख चुका हूँ। अब अथर्ववेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ गोपथ ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य कर रहा हूँ। इस ग्रन्थ का वर्तमान में प्रख्यात आर्य विद्वान् पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी (अथर्ववेद-भाष्यकार) का भाष्य उपलब्ध है। इसका सम्पादन प्रख्यात विदुषी डॉ. प्रज्ञादेवी एवं डॉ. मेधादेवी ने किया है। इसमें ये विद्वान् ब्रह्म के तप करने, खूब तपने, उनके ललाट तथा शरीर के सभी रोमकूपों से पसीने की धाराएँ छूटने की चर्चा कर रहे हैं, परन्तु सब विद्वान् मौन हैं। **हम कुछ कहें, तो कहेंगे 'बोलो मत, ये अपने बहुत बड़े आर्य विद्वान् हैं', यह कैसा**

खेल है? कुछ विद्वान् कहते हैं कि कुछ विद्वानों से कुछ भूलें हो गयीं, उसके आधार पर ही उनके भाष्य को नकारा नहीं जा सकता। इनके भाष्यों में बहुत सी अच्छाइयाँ भी हैं। हमें केवल अच्छाई ही देखनी चाहिए। यह पक्षपातपूर्ण व्यवहार धर्म का परिचायक नहीं है। इन आर्य विद्वानों के अन्य साहित्य के लिए मैं भी तो इनका पूर्ण सम्मान करता हूँ, परन्तु भूलों का सुधार न किया जाए, यह उचित नहीं है। यदि पिता से कोई भूल हो जाए, तो पुत्र का परम कर्त्तव्य है कि उस भूल को सुधारे, न कि पिता की भूल को अनदेखा करे। रोग को दबाने या अनदेखा करने से रोग कम नहीं होता, बल्कि बढ़ता है और अन्त में असाध्य हो जाता है।

मैं जानना चाहता हूँ कि क्या पुराण, कुरान, बाइबिल, जैन व बौद्ध ग्रन्थों एवं वामपन्थी लेखकों के ग्रन्थों में कुछ भी अच्छाई नहीं है? यदि हाँ, तो ऋषि दयानन्द ने उनका खण्डन क्यों किया है? सत्यार्थप्रकाश लिखने की क्या आवश्यकता थी? ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका में सायण व महीधर के वेदभाष्य से 4-5 मन्त्र लेकर उनका खण्डन करने की क्या आवश्यकता थी? क्या आचार्य सायण का कोई महत्त्व नहीं है? क्या वैदिक ग्रन्थों को बचाये रखने में

उनकी कोई भूमिका नहीं है? यदि है, तब उनका खण्डन क्यों करना? आर्य विद्वानों ने अनेकत्र आचार्य सायण की वेदभाष्य शैली को ही अपनाया है, तब भी सायण दोषी और हमारे विद्वान् निर्दोष, यह सब क्या है?

आर्य जगत् में प्रख्यात वैज्ञानिक संन्यासी माने जाने वाले स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती अपने पूज्य पिता पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के शतपथ भाष्य के दोषों के सहभागी हैं। स्वामी जी ने अपने ग्रन्थ 'भारतीय विज्ञान के कर्णधार' में कई वेद मन्त्रों को उद्धृत किया है, परन्तु किसी भी मन्त्र का ऋषि दयानन्द का भाष्य उपलब्ध होते हुए भी उद्धृत न करके पश्चिमी विद्वानों का मूर्खता व पाप से परिपूर्ण भाष्य उद्धृत किया है, परन्तु कोई मत बोलो, क्योंकि वे हमारे वैज्ञानिक वेदज्ञ संन्यासी हैं। यह सब खेल हमारे विद्वानों व आर्य-नेताओं द्वारा खेला जा रहा है और वैदिक विज्ञान को संसारभर में पहुँचाने के लिए एकमात्र समर्पित हमें और हमारी संस्था को नीचा दिखाया जा रहा है। स्वामी जी बहुत बड़े रसायन शास्त्री थे, इसके लिए वे सम्मान के पात्र हैं, परन्तु वेदविषय में उनका दृष्टिकोण आर्ष नहीं था।

आज हमारे आर्थिक स्रोतों को तोड़ने का पुरुजोर

प्रयास हो रहा है। आर्य समाज में ही पनप रहा वेद से नितान्त अनभिज्ञ एक सम्प्रदाय संगठित होकर वैदिक विज्ञान से लोगों को काटने का प्रयास कर रहा है। कभी-कभी सन्देह होता है कि कहीं हमारे यहाँ भी कुछ कथित ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट से ग्रस्त विद्वान् **विदेशी एजेंट** तो नहीं हैं ? यदि ऐसा नहीं होता, तो वे वैदिक विज्ञान के पीछे लट्ठ लेकर ऐसे न पड़े होते। हम तो ईश्वर विश्वास पर आगे बढ़ रहे हैं। विज्ञान के प्रोफेसर व छात्र-छात्राएँ अपने आधुनिकतम सिद्धान्तों का हमसे प्रबल खण्डन सुनने के उपरान्त भी हमें सुनने के लिए उत्सुक रहते हैं। वे अतीव विनम्र व श्रद्धालु भी दिखाई देते हैं, परन्तु 'विद्या ददाति विनयम्' तथा वेद व ऋषियों की बात करने वाले मुझे अहंकारी व अनाड़ी कहते हैं, मेरी अनुपस्थिति में अपशब्दों की वृष्टि करते हैं। सभाएँ नितान्त उपेक्षा करती हैं। **इससे लगता है कि आज आर्य समाज के कुछ लोग आर्य समाज रूपी वृक्ष की जड़ों को काट रहे हैं। धनपतियों को मूर्ख बनाकर नाना आडम्बर रचते व सुविधाएँ भोगते एवं शिष्य-शिष्याएँ बनाते व बढ़ाते हैं, जिससे उनकी आय में निरन्तर वृद्धि होती रहे।**

वास्तविकता यह है कि सामान्य आर्य कार्यकर्त्ता

इन बड़े-बड़े विद्वान् माने जाने वालों से अधिक ईमानदार व सिद्धान्तनिष्ठ है।

मैं आपको सूचित करना चाहूँगा कि **गोपथ ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्य** के अतिरिक्त मैं वर्तमान में **वेद के कुछ कठिनतम मन्त्रों का त्रिविध भाष्य** भी कर रहा हूँ। **नासदीय सूक्त सहित भाववृत्त देवता वाले सभी सूक्तों का त्रिविध भाष्य कर चुका हूँ।** जो घोषणापूर्वक कहते हैं कि प्रत्येक वेद मन्त्र का त्रिविध भाष्य नहीं हो सकता, वे वेद के यथार्थ स्वरूप को किञ्चित् मात्र भी नहीं जानते, ऐसी मैं स्पष्ट घोषणा करता हूँ। मैं आप सबसे जानना चाहता हूँ कि क्या आप वेद स्वाध्याय करते हैं और यदि हाँ, तो क्या आपको प्रतीत होता है कि वेद उस ब्रह्म की रचना है, जिसने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड बनाया व इसे चलाता है? यदि ऐसा नहीं लगता, तो इसका कारण यही है कि वे भाष्य वेद का सत्यार्थ बताने में समर्थ नहीं हैं। केवल ऋषि दयानन्द के भाष्य ही कुछ संकेत देते हैं। आज कुछ लोग आधुनिक विज्ञान की भाषा बोलकर, उसकी नकल करके तथा कुछ वैदिक ज्ञान आधा अधूरा सीखकर ही वैदिक विज्ञान के प्रवक्ता बनते भी देखे जाते हैं, परन्तु वेद व ब्राह्मण ग्रन्थों के गम्भीर विज्ञान के बिना वे कभी भी उपहास के पात्र बन सकते

हैं, भले ही सामान्य पौराणिकों वा आर्यजनों में वे प्रशंसित हो रहे हों। अनेक युवक हमारी वीडियो सुनकर ही तोड़-मरोड़ कर वैदिक विज्ञान का प्रचार कर प्रसिद्ध हो रहे है। उनमें इतनी भी ईमानदारी नहीं कि हमारा अथवा हमारे ग्रन्थों का नाम भी ले लें। ऐसे लोग वेद ज्ञान को बहुत अधिक नहीं समझ पायेंगे। इतने पर भी वे जो कर रहे हैं, वह न करने वालों से तो ठीक ही है। हाँ, **ईमानदारी के बिना धार्मिकता का कोई अस्तित्व नहीं और उसके बिना वेद का कोई अर्थ नहीं है।**

मैंने पं. ओझा के सम्प्रदाय, जिसकी मैं चर्चा कर चुका हूँ, पर जो चुनौतीपूर्ण लिखा था, वह मेरा लेख कुछ आर्य पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुआ था और डॉ. भवानीलाल भारतीय मेरे लेख से बहुत गद्‌गद हुए थे। 'वेदविज्ञान-आलोकः' ग्रन्थ की भूमिका में भी मैंने पं. ओझा के कल्पित विज्ञान की आलोचना की है, इतने पर भी मुझे इनका अनुकरण करने वाला कहना दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं किसी का अन्धानुकरण नहीं करता हूँ। परब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रदत्त प्रज्ञा का उपयोग करके वेद व आर्ष ग्रन्थों के गूढ़ विज्ञान को प्रकाशित करने का प्रयत्न करता हूँ। ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य आदि ग्रन्थ अनेकत्र मेरे मार्गदर्शक बनते हैं। **मेरा मत**

है कि वेद एवं ऋषियों का विज्ञान बहुत ही असाधारण होना चाहिए, क्योंकि उनका विज्ञान परमात्मा का ही विज्ञान है। वर्तमान विज्ञान उसके समक्ष कुछ भी नहीं हो सकता। यदि ऐसा नहीं होगा, तो वेद को ईश्वरीय ज्ञान नहीं माना जा सकता और न ऋषियों की कोई महिमा सिद्ध हो सकती है, न आर्य्यावर्त का ही कोई गौरव रह पाता है। वेद व ऋषियों का नाममात्र लेने वाले क्या जानें अथवा इस ध्रुव सत्य को पश्चिमी बौद्धिक दासता के मारे महान् वैदिक ज्ञान-विज्ञान को क्या समझें? वस्तुतः हजारों वर्षों से विलुप्त वैदिक ज्ञान को यदि कोई अकस्मात् प्रकट कर दे, तो रूढ़िवादी विद्वानों व उनके अनुयायियों को वह कल्पना ही लगता है। आज मेरे साथ यही हो रहा है। ऋषि दयानन्द के समय भी तत्कालीन वैदिक विद्वानों को उनके वेदभाष्य काल्पनिक प्रतीत होते थे और आज मेरे भाष्य भी इन्हें काल्पनिक प्रतीत हो रहे हैं। वास्तविकता तो यह है कि मेरे 'वेदविज्ञान-आलोकः' तथा 'वेदार्थ-विज्ञानम्' ग्रन्थों को समझने वाले बहुत विरले ही हैं।

हमने तो स्वयं को सभी ऐषणाओं से सदा ही दूर रखा, केवल सत्य व न्याय का मार्ग अपनाया, अपने व पराये में भेद नहीं किया। वेद की

वैज्ञानिकता को विश्व में स्थापित करने में केवल परमात्मा व कुछ दानी महानुभावों व सहयोगियों के साथ अपमान के कड़वे घूँट पीकर, बार-बार विष पीकर, शरीर से संघर्ष करते हुए, अपने-पराये, देशी-विदेशी सबके विरोध व षड्यन्त्रों का सामना करते हुए भी हम आगे बढ़ रहे हैं। मेरी मानस सन्तान प्रिय विशाल आर्य एवं डॉ. मधुलिका आर्या प्राणपण से मेरे साथ हैं। प्रिय विशाल आर्य ने भी एक पुस्तक 'परिचय वैदिक भौतिकी' लिखी है, जिसका अंग्रेजी संस्करण भी उपलब्ध है। इस पुस्तक का महत्त्व हमारे ट्रस्टी प्रो. सन्दीप कुमार सिंह, जो एक भौतिक वैज्ञानिक भी हैं, से अधिक कौन जानता है? डॉ. सन्दीप कुमार सिंह ने अपने निजी व्यय से 150 से अधिक पुस्तकें खरीद कर और PDF रूप में भी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों को दी हैं और उनमें से अनेक ने उत्साहजनक प्रतिक्रिया भी व्यक्त की है। हमारे वैदिक विद्वान् अथवा नेता कहे जाने वाले कब इस पुस्तक को पढ़ेंगे व समझेंगे, यह हमारी समझ से परे है। 'विज्ञान हमारा विषय नहीं', इस वाक्य को ये कब तक रटते रहकर वेदविमुख बने रहेंगे? क्या वेद भी इनका विषय नहीं? यदि नहीं, तो फिर आर्यों का विषय क्या रह गया? ऋषि दयानन्द के 'वेदों की ओर

लौटो' के नारे से हमने क्यों किनारा कर लिया?

श्री विशाल आर्य ने 'वेदविज्ञान-आलोक:' एवं 'वेदार्थ-विज्ञानम्' जैसे विशालकाय ग्रन्थों सहित मेरी लगभग 18 से 20 पुस्तकों का सम्पादन एवं सम्पूर्ण डिजाइनिंग आदि का कार्य किया है। संस्था तथा 'द वेद साइंस पब्लिकेशन' की वेबसाइट, GST, FCRA, CSR, नीति आयोग में पंजीकरण के कार्यों के अतिरिक्त विदेशों में साहित्य विक्रय आदि की अनुज्ञा प्राप्त करने सम्बन्धी कार्य, जो CA के द्वारा ही होते हैं, स्वयं किए हैं। प्रिंटर पुस्तकों को मात्र छापता है, शेष कार्य यहीं इनके द्वारा सम्पन्न होता है। कार्यक्रमों में बैनर, पोस्टर सब यहीं बनाकर केवल प्रिंट कराये जाते हैं। सोशल मीडिया और वीडियो एडिटिंग का सम्पूर्ण कार्य भी इन्हीं के द्वारा होता है। पुस्तकों की साज-सज्जा के स्तर से आप सभी अवगत हैं। सैद्धान्तिक भौतिकी का व्यक्ति ये सब कार्य कैसे कर लेता है, कभी विचार करना। इनके विषयों (Cosmology, Astrophysics, String Th, QFT, Plasma Physics) पर भी विज्ञान के किसी जानकार से चर्चा करके देखना, आपको विदित होगा कि इन विषयों में दिल्ली विश्वविद्यालय से भौतिकी से MSc करने तथा अब तक IIT-JAM

(दो बार), GATE (AIR 233), DU, KUK (AIR 4), CUCET (AIR 19), JEST (AIR 317, 592), DCRUST (AIR 1), UoHyd जैसी राष्ट्रीय परीक्षाओं को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के पश्चात् वेदविज्ञान के यज्ञ में जीवन देने का क्या अर्थ होता है?

इनकी धर्मपत्नी डॉ. मधुलिका आर्या के कार्य को देखकर उनकी आचार्या पद्मश्री आदरणीया आचार्या डॉ. सुकामा जी भी भावुक हो गई थीं। संस्कृत में PhD के साथ NET, JRF और SRF करके बिना किसी मानदेय के किसी संस्था के लिए जीवन लगा देने का अर्थ, तब विदित होगा, जब आपके परिवार में आपकी कोई बेटी व पुत्रवधू इतनी योग्यता को अर्जित करके वेदहित में जीवन देने वाले किसी धर्मार्थ ट्रस्ट में कार्यरत युवक से विवाह करे और बिना किसी मानदेय के स्वयं भी अपने पति के साथ अहर्निश तपस्या में जुट जाए। डॉ. मधुलिका ने 3 वर्ष में 'वेदार्थ-विज्ञानम्' जैसे विशाल ग्रन्थ के साथ 10 पुस्तकों का अपने पति के साथ मिलकर सम्पादन व प्रूफरीडिंग का कार्य किया है। इन दोनों की अन्य कोई न तो कामना है और न कोई ध्येय। यह जानते हुए भी कि इस मार्ग में उनके गुरु व धर्मपिता के अपने आर्य

समाज में ही सब ओर विरोधी हैं, जिनमें से कुछ तो शत्रुवत् व्यवहार कर रहे हैं, ये दोनों मेरे साथ भौतिक ऐश्वर्यों की लालसा को त्यागकर मेरे साथ सन्तान के समान कंटीले पथ पर चल रहे हैं। इनके माता-पिता के त्याग का मूल्य भी वही समझ पायेगा, जो अभावों में जीवन जीकर अपने पुत्र को उच्च शिक्षा दिलाकर भी उस पुत्र तथा पुत्रवधू को वेद की सेवा में लगा देने का साहस करेगा।

अभी **तीन ब्रह्मचारी भी यहाँ वैदिक विज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं।** इससे अधिक ब्रह्मचारियों को रखने के लिए हमारे पास अभी न धन है और न स्थान। इस संस्था में वेद-विज्ञान अनुसंधान, अध्ययन -अध्यापन के साथ-साथ **प्राचीन दुर्लभ आर्ष ग्रन्थों को डिजिटल रूप में संरक्षित करने का कार्य भी चल रहा है। हमारे यहाँ से प्रकाशित सभी पुस्तक आदि का सम्पूर्ण कार्य अत्यल्प संसाधनों में यहीं होता है। दैनिक यज्ञ के साथ समय-समय पर निर्धनों परिवारों को अन्न, वस्त्रादि भी संस्था द्वारा किया जाता है।** यहाँ छः कर्मचारी भी कार्यरत हैं। वर्तमान में वर्ष में लगभग 60-70 लाख व्यय होता है, जो आप जैसे उदारमना दानी महानुभावों के सहयोग से होता है। यद्यपि हमारे विरोधियों ने अनेक नगरों से

दानदाताओं को हमसे दूर कर दिया है, परन्तु कुछ नये भी जुड़ रहे हैं।

कानपुर के **अत्यन्त धर्मिक पुरुष आदरणीय श्री आर.एन. त्रिपाठी जी**, जिनका आर्य समाज से कोई सम्बन्ध भी नहीं है, पुनरपि 30 बीघे भूमि खरीदने का सम्पूर्ण व्यय उन्हीं के दान से हुआ है। चारदीवारी के लिए भी उन्होंने आर्थिक सहयोग दिया है। आश्चर्य यह है कि वे स्वयं को भामाशाह वा दानवीर जैसे सम्बोधनों से सम्बोधित भी नहीं करने देते। अब **प्रिय श्री राकेश उपाध्याय, इन्दौर भी संस्थान के विशेष आर्थिक स्तम्भ के रूप में उभरे हैं। वेदविज्ञान-आलोकः एवं वैदिक रश्मिविज्ञानम् का महत्त्व कोई इनसे पूछे। 'वेदविज्ञान-आलोकः' इनके रोम-2 में समाया है। इनकी वेद एवं ऋषि भक्ति श्लाघनीय है।** इन्हीं के अनुरोध तथा गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों एवं अन्य असमर्थ वेद-विज्ञान प्रेमियों को ध्यान में रखकर **हमने अपने ग्रन्थों की PDF हमारी वेबसाइट[2] पर संसार को निःशुल्क उपलब्ध कराने का निर्णय लिया।**

आर्यो वा स्वयं को सनातनी हिन्दू कहने वालो!

---

[2] https://vaidicphysics.org

आज वेद पर भारी संकट है, विश्व में हमारे समक्ष सर्वत्र चुनौती हैं, ऐसे में आपको यह विचारना है कि आपको मंचशूरता चाहिए अथवा वेद माता की यथार्थ सेवा चाहिए? कहानी-किस्से व ओजस्वी-भड़काऊ भाषण चाहिए अथवा वेद व ऋषियों का गम्भीर विज्ञान चाहिए? यम-नियम का वास्तविक पालन चाहिए अथवा सीधे आँख बन्द करके समाधि का स्वप्न दिखाने वाले चाहिए? अपने वेद एवं पूज्य ऋषियों व प्राचीन वैदिक सम्राटों का सम्मान चाहिए अथवा सर्वत्र इनका होता हुआ अपमान चाहिए? वेद व ऋषियों का अपमान करने वालों को केवल गाली देने वाले वक्ता व लेखक चाहिए अथवा उन्हें तर्कसंगत वैज्ञानिक उत्तर देने वाले वैज्ञानिक विद्वान् चाहिए? आपको विदेशियों की बौद्धिक दासता चाहिए अथवा अपने महान् ऋषियों व वेदों की अप्रतिम प्रज्ञा पर स्वाभिमान चाहिए? आपको अनेक दोषों से युक्त वेदभाष्य व आर्षग्रन्थों के भाष्य चाहिए अथवा पूर्ण निर्दोष, वैज्ञानिक व तर्कसंगत व्यावहारिक व आध्यात्मिक भाष्य चाहिए? आपको मन्दिरों में सुन्दर मूर्तियाँ ही चाहिए अथवा जिनकी वे मूर्तियाँ हैं, उनका यर्थाथ इतिहास व विज्ञान भी चाहिए? आपको वेद के नाम पर मिथ्या किस्से-कहानियाँ चाहिए अथवा वेद का सत्य ज्ञान चाहिए? आपको आर्य

समाज के तृतीय नियम की हत्या (वेद से विमुख होना) चाहिए अथवा इस नियम की पूर्ण सुरक्षा व सुनिश्चितता चाहिए? आपको महर्षि ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त का केवल जयघोष, सुन्दर चित्र, भीड़ व नाटक चाहिए अथवा उनके वेद पढ़ने के आदेश की पालना चाहिए? यह मैं आपके पवित्र आत्मा पर ही छोड़ता हूँ।

यदि आप वास्तव में वेद, आर्षग्रन्थों, प्राचीन इतिहास, वैदिक संस्कृति, वास्तविक वैदिक अध्यात्म एवं वैदिक विज्ञान और बौद्धिक स्वतन्त्रता की रक्षा चाहते हैं, तो आइये! हम आपका स्वागत करते हैं। **तन-मन-धन से हमें आपका निरन्तर संकल्पबद्ध सहयोग चाहिए। वेद को बचाना प्रत्येक मानव का उत्तरदायित्व है। यदि वेद को आज नहीं बचाया गया, तो मानव जाति का अस्तित्व इस पृथिवी से मिट जायेगा। इसका पाप उनको लगेगा, जो वैदिक विज्ञान के मार्ग में बाधक बन रहे हैं, चाहे वे वेद का नाम लेने वाले हों अथवा उदासीन हों।** ईश्वर हम सबको सद्बुद्धि व साहस दे कि हम वेद की रक्षा को ही अपना सर्वोपरि कर्त्तव्य समझकर जुट जाएँ, अन्यथा हमारी पीढ़ियाँ हमें धिक्कारेंगी।

आशा है आप इस पत्र पर आत्मना गम्भीरता व

निष्पक्षता से विचार करके अपने धर्म व कर्त्तव्य को अवश्य निभायेंगे। इसी आशा के साथ...

वेद एवं मानवता का विनम्र सेवक

आचार्य अग्निव्रत, संस्थापक प्रमुख
वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)
भागलभीम, भीनमाल (राज.) 343029
फोन नम्बर : 9829148400
ईमेल : info@vaidicphysics.org

जय माँ वेद भारती